Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 9, September - 2026

DOIs:10.2018/SS/202609004 --:-- Research Paper / Article / Review

किन्नरों के दुःख दर्द ब्यान करता 'नाला सोपारा'

संजय कुमार यादव
शोधार्थी, मोनाड विश्वविद्यालय.
Email- sy203343@gmail.com

शोध सार : चित्रा मुद्गल समकालीन हिंदी साहित्य की एक सुप्रसिद्ध लेखिका हैं। यह अपने लेखन कार्य में अभी भी कार्यरत हैं एवं नए-नए विषयों को लेकर समय-समय पर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होती हैं। इनकी सभी रचनाएं समाज के दर्पण के समान जान पड़ती हैं, जिनमें समाज में छोटे से छोटे समझे जाने वाले हर एक विषय को लेकर प्रकट किया गया है। उनके प्रत्येक उपन्यास का विषय एक-दूसरे से सर्वदा अलग और विशिष्ट है। *'पोस्ट बॉक्स नंबर 203, नाला सोपारा'* उनकी सभी रचनाओं से अलग है। इस उपन्यास की विषयवस्तु हाशियाकृत किन्नर समुदाय पर केंद्रित है, जिसे सभ्य समाज में कीड़े-मकोड़े सा समझा जाता है। इस उपन्यास की शैली पत्रात्मक है। पत्रों में पुत्र का एक लाचार माँ से संवाद है। कुल मिलाकर इसमें 17 पत्र (23 जुलाई 2011 से लेकर 24 दिसंबर 2011 के बीच लिखे गए) और उपसंहार में दो समाचार इस उपन्यास में सम्मिलित हैं।

बीज शब्द : समकालीन, पत्रकारिता, पूंजीवाद, समाज, ट्रेंड, मनोविज्ञान, किन्नर, विमर्श, पत्रात्मक, शैली, संविधान, आत्मकथा, संवेदात्मक विषय, बाल मनोविज्ञान ।

1. किन्नरों के दुःख दर्द ब्यान करता 'नाला सोपारा'

इस उपन्यास की कथा की शुरुआत विनोद के पत्र से होती है (पूरे उपन्यास में सिर्फ विनोद के ही पत्र हैं। उन्हीं पत्रों में माँ को अपने जीवन की सभी पीड़ाओं को संवाद के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है)। उपन्यास के प्रमुख नायक विनोद को किन्नर होने के कारण अपने परिवार से दूर जाना पड़ता है। वह अपनी माँ को संबोधित करते हुए पत्र लिखता है—

"जब बाहर और भीतर एक साथ मेघ बरस रहे हो तो तुझे लिखे जाने वाली चिट्ठी शुरू कैसे हो सकती है |"1

इस वाक्य में विनोद की पीड़ा समझने योग्य है। माँ अपने बच्चे की पीड़ा को कम करने के लिए सुझाव देती है कि जब वह अपमान महसूस करे, तब वह शांत होकर ध्यान मुद्रा में बैठकर अपने अंतर्मन में कृष्ण का चित्र उतारने का प्रयास करे। लेकिन उसे मन में कृष्ण दिखाई नहीं देते, इसलिए वह पूछ लेता है कि—क्या कृष्ण को उस जगह से परहेज़ है जहाँ वह रहता है, या फिर उसके आधे-अधूरे शरीर से?

संसार और सृष्टि की विडम्बना तो देखिए—जब शरीर का कोई अंग काम नहीं करता है या उसे काटकर अलग करना पड़ जाए, तो उस कटे हुए स्थान पर नकली अंग लगाया जा सकता है; परंतु अनुवांशिक विकलांगता का किसी भी प्रकार का कोई प्रावधान नहीं है, सिवाय इसके कि ऐसे बच्चों को हमेशा के लिए छोड़ दिया जाता है।

विनोद की मानसिक पीड़ा को मुद्गल जी ने इन वाक्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया है—

"तूने मेरी बा, तूने और पापा ने मिलकर मुझे कसाइयों के हाथ मासूम बकरी सा-सौप दिया | मेरी सुरक्षा के लिए कोई कानूनी कार्रवाई क्यों नहीं की? मनसुख भाई जैसे पुलिस अधीक्षक पापा के गहरे दोस्त होते हुए ? वह अपने आप मुझे बचाने के लिए तो नहीं आ सकते थे ? मेरे आंगिक दोष की बात पापा उनसे बांटी जो नहीं होगी | वरना वह मुझे बचाने जरूर आ जाते | क्यों वह अनर्थ हो जाने दिया तूने जिसके लिए मैं दोषी नहीं था..... क्या सामान्य लोगों की तरह जीवन जीने का अधिकार ना होता मेरा |"2

कहने को तो ट्रांसजेंडर के लिए उनके अधिकार हेतु अनेक कानून बने हैं, फिर भी सच्चाई यह है कि उन्हें पूर्णतः उनका अधिकार प्राप्त नहीं है। संसार में वे हर तरह से उपेक्षित ही हैं। सरकार ने कन्या भ्रूण हत्या को अपराध घोषित करते हुए कानून बना रखा है। इसके तहत माता-पिता को अपराधी करार दिया जाता है। लेकिन जननांग दोष वाले बच्चों को घर-परिवार से त्यागने वाले माता-पिता को अपराधी क्यों नहीं माना जाता?

आज के समय में मेडिकल साइंस के चमत्कारों को कौन नहीं जानता? क्या नहीं हो सकता? हार्मोन असंतुलन को भी अब संतुलित किया जाने लगा है। सर्जरी के माध्यम से अनेक दोषों को ठीक किया जा सकता है—तो फिर जननांग दोष को क्यों नहीं?
अंततः चित्रा मुद्गल जी ने विनोद के द्वारा आलोचना करते हुए कहा है कि—

"अविकसित लिंग दोषियों के दिल-दिमाग में स्वयं के प्रति बैठे हुए नकारात्मक सोच को निष्कासित करना जरूरी है।"3

हालांकि कानूनी तौर पर किन्नरों को भी सभी शिक्षा संस्थानों, नौकरियों आदि में तृतीय लिंग का अधिकार प्रदान किया गया है, परंतु बात यह है कि हमारा समाज और स्वयं किन्नर समाज इसे कितना स्वीकार करता है? क्योंकि किन्नरों में भी संसार को लेकर हीन भावना इतनी गहराई तक घर कर चुकी है कि वे भी मान बैठे हैं कि यह सब उनके लिए नहीं है। यह बात विनोद के इस कथन से समझी जा सकती है—

"कोशिश में हूं बा | उनसे छिपकर कोई बड़ा काम सीख लूं सकूं ताकि किसी भी रूप में उन पर निर्भर न रहूं | अधूरी शिक्षा आड़े आ जाती है | गाड़ियां मजबूरी में धोता हूं | कहीं और भाग सकता नहीं | एक बार भागा था पड़ोस के बेकरी वाले हमीद मियां के आश्वासन पर | सोचा था, दिल्ली से अलीगढ़ दूर है | नहीं ढूंढ पाएंगे लेकिन गलतफहमी में था | एक सुबह पाया बेकरी का शटर उठाया ही था कि दल के सरदार तितली बाई को प्रेत सा सामने खड़ा पाया।"4

कानूनी रूप से इन्हें अन्य वर्ग की श्रेणी में रखा जाता है। जब पूनम विनोद से कहती है कि जनगणना में सरकार ने किन्नरों को भी शामिल कर लिया है, तब विनोद अपना गुस्सा व्यक्त करते हुए कहता है—

"जहाँ सरकार ने अनुसूचित जनजाति को रखा है, पिछड़ा वर्ग को रखा है, विकलांग को रखा है और बहुतों को रखा है — यह सब समाज के घोर वंचित वर्ग हैं।लिंग दोषी नहीं, बाकायदा स्त्री-पुरुष हैं। लिंग दोषी सभी लिंग से स्त्री-पुरुष नहीं हैं, तो क्या मनुष्य नहीं हैं? किन्नर बिरादरी का संघर्ष उन्हें "मनुष्य" माने जाने का संघर्ष है। फिर "अदर्स" में उन्हें क्यों धकेला जाता है? "जीरो अदर्स" — सरकार को इसे खत्म कर देना चाहिए। देखिए, मेरा मानना यह है कि अपना लिंग उन्हें चुनने की स्वतंत्रता दीजिए। उन्हें अलग से इस रूप में चिन्हित करना घोर अमानवीय कृत्य है। किन्नर चाहे जिस भी वर्ग की संतान हों, चाहे जिस जाति, बिरादरी, समुदाय से संबंधित हों — उसी जाति-वर्ग के अनुसार उन्हें अपना सामान्य जीवन जीने की सुविधा मिलनी चाहिए। अगर वे अशिक्षित श्रेणी के माता-पिता की संतानें हैं, तो वे उस आरक्षित श्रेणी को प्राप्त होने वाली सुविधाओं की हकदार हैं। समर्थ माता-पिता के समक्ष उनके समुचित भरण-पोषण की दिक्कत है ही नहीं। उन्हें जरूरत है तो जागरूकता की।"5

विनोद तिरस्कार और अपमान की ज़िंदगी नहीं जीना चाहता है, वह तो एक सम्मान की ज़िंदगी चाहता है। इसी कारण वह कहता है—

"कह देना सरदार से, अन्य जीरो में शरीर होकर नहीं बनवाना मुझे आधार कार्ड... फोटो ऊपर की खींचेगी, नीचे की नहीं।"6

चित्रा मुद्गल जी ने विनोद के माध्यम से किन्नर समुदाय के मन की व्यथा को व्यक्त करने का प्रयास किया है कि वे भी हम सभी की तरह सम्मान की ज़िंदगी प्राप्त करना चाहते हैं। सरकार ने किन्नरों को तीसरे खाने में आरक्षित किया है। चित्रा मुद्गल विनोद के माध्यम से यह टिप्पणी करती हुई कहती हैं—

"इस खेल को जननांग दोषी नहीं समझ पा रहे हैं। नहीं समझ पाएंगे।"7

विनोद रिश्तों को पाने के लिए तड़पता है, अपनों का प्यार पाने हेतु तरसता है। वह पीड़ा को अपनी पत्र में अभिव्यक्त करता है, जिसे पढ़ते समय आंखें भर आती हैं।

"अपने इस दिकरे को तुम लोगों ने स्वयं घर से खदेड़, उन हाथों में सौंप दिया, जिन्होंने अपने मानसिक अनुकूलन को ही अपनी नियति मान लिया है, और समाज के हाशिए के उस नरक की शर्तों को अपने जीवन का पर्याय मान, सुलगती-भीगती लड़कियों सा छूता रहता है।बा क्यों नहीं तोड़ने की कोशिश की उन लोगों ने उन शर्तों को, कि नहीं जिएंगे हम उस तरह से, जिस तरह से वे जिलाए रखने की साजिश रच रहे हैं — अपने मनोरंजन और खिलवाड़ के रस को जीने के लिए।"8

यहां विनोद सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, बल्कि संपूर्ण किन्नर समुदाय का वह प्रतिनिधि है। इस संदर्भ में वह कहता है कि उसे जिस नर्क में धकेला गया है, वह एक अंधा कुआँ है, जहां सिर्फ सांप और बिच्छू निवास करते हैं —

"सांप-बिच्छू बनकर वह पैदा नहीं हुए होंगे, बस इस कुएं ने उन्हें आदमी नहीं रहने दिया।"9

विनोद, किन्नर होकर पैदा होने की पीड़ा, घर, परिवार और समाज से तिरस्कृत होने का दुख झेलता है। वह किन्नर समुदाय के नियम-कानून को नहीं अपना सकता है। वह कहता है —

"उनके लात, घूंसे, थप्पड़, और कानों में गर्म तेल से टपकती किसी भी संबंध को न बख्शने वाली अश्लील गालियों के बावजूद, न मैं मटक-मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ, न साल में सितारे वाली साड़ियां लपेट, लिपस्टिक लगाकर, कानों में बूटे लटकाने को। बहुत कुछ अविश्वसनीय वे हरकतें भी थीं, जिन्होंने मुझे बहुत तोड़ने की कोशिश की — और जिनका ज़िक्र मैं तुझसे कैसे कर सकता हूं?"10

घर-परिवार के लोग एक किन्नर के रूप में जन्मे बच्चों का त्याग कर देते हैं, और समाज उन्हें दुत्कार देता है। लेकिन समाज और संसार की विडंबना तो देखिए — समाज में जब भी किसी के यहां कोई खुशी का अवसर आता है, जैसे विवाह या नवजात शिशु का जन्म, तो किन्नरों का आशीर्वाद लिया जाता है। सामाजिक मान्यता है कि किन्नरों का आशीर्वाद लेने से वंश में सुख-समृद्धि की बढ़ोतरी होती है, परंतु समाज में किन्नर समुदाय को हेय और घृणा की दृष्टि से देखा जाता है।

मां और बेटे के बीच समाज द्वारा बनाई गई एक सामाजिक दूरी है। उन दोनों को आपस में एक-दूसरे से बात करने हेतु पत्रों का सहारा लेना पड़ता है। वह अपनी मां को सीधे पत्र नहीं भेज सकता है। इसी कारण उसकी मां ने पोस्ट बॉक्स का सहारा लिया, ताकि सारे परिवार के सदस्य उसे न पहचान सकें, और वह जगह हँसी का पात्र बनने से बच जाए। आख़िर कारण ऐसा क्यों? क्या दोष उस बेटे का? उस मां की क्या स्थिति होगी, जिसने उस किन्नर बच्चे को जन्म दिया?विनोद अपनी मां से अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहता है —

"मनुष्य के दो ही रूप अब तक देखे थे मैंने। इस तीसरे रूप से मैं परिचित तो था, लेकिन उसे मैं पहले रूप का ही एक हिस्सा मानता था। तूने मेरे जन्मते ही मनुष्य के इस तीसरे रूप को देख लिया था न, बा? उसी समय खत्म कर देना था न, बा, मुझे? तू किस मोह में पड़ गई थी, बोल?"11

लेखिका ने अनेक स्थानों पर विनोद के माध्यम से किन्नरों की मानसिक पीड़ा और संघर्ष को बहुत ही मार्मिक ढंग से उभारा है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

"कभी-कभी मैं अजीब सी अंधेरी, बंद, चमगादड़ों से भरी सुरंग में स्वयं को घुटता हुआ पाता हूँ। बाहर निकलने को छटपटाहट होती है। मैं मनुष्य तो हूँ न, फिर मुझमें क्या कमी है, जिसकी इतनी बड़ी सजा? यह कौन सा तिलिस्म है, बा! हैरत में हूँ, सबने मुझसे मुँह मोड़ लिया, सपनों ने मुँह फेरा।"12

ऐसी अनेक दर्दभरी उक्तियाँ और पीड़ा हैं, जो किन्नर समुदाय की पहचान और छटपटाहट को चित्रित करतीहैं। उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने किन्नरों के जीवन से संबंधित अनेक मार्मिक एवं दुःख भरे पहलुओं को उजागर कर प्रस्तुत किया है। विनोद एक किन्नर होने के कारण ही घर और परिवार से दूर होकर भावनात्मक तौर पर शोषण का शिकार बनता है। वह चाहते हुए भी ज्योत्सना से शादी नहीं कर पाता है। इस बात को लेकर वह पूरी जिंदगी परेशान रहता है, और अपनी पीड़ा को एक पत्र के माध्यम से व्यक्त करता हुआ कहता है—

"मुझे लगता है, बा, मैं कुछ बन जाता, तो उससे विवाह ज़रूर करता। सब कुछ बता देता उसे, कह देता — तू मुझसे फेरे भर लेले। अपनी इच्छा से जीने के लिए तू स्वतंत्र है। बच्चा हम गोद ले लेंगे। गोद नहीं लेना चाहोगी, तो जिससे मर्ज़ी हो बच्चा पैदा कर लो। खुशी-खुशी मैं उसे अपना नाम दूँगा, वे सारे सुख दूँगा जो एक बाप से औलाद उम्मीद करती है।"13

विनोद के इस कथन से यह बात स्पष्ट होती है कि वह भी सभी सामान्य लोगों की तरह ज़िंदगी जीना चाहता है, लेकिन यह संभव नहीं हो पाता। वह रिश्तों के लिए तड़पता है और अंदर ही अंदर अपने आप में घुटता रहता है।

विनोद दूसरे बच्चों की तरह ही स्कूल जाता है। वह विषयों में तेज़ है, सिर्फ फर्क इतना है कि वह सभी बच्चों की भांति चारदीवारी से सटकर पेंट के बटन खोलकर खड़ा नहीं हो सकता।

उसे किन्नरों से बचाने के लिए उसके अभिभावक बहुत कोशिश करते हैं। जब पहली बार किन्नर उसके घर आते हैं और बच्चे को दिखाने के लिए कहते हैं, तब किन्नरों से विनोद को बचाने के लिए छोटे बेटे को दिखा दिया जाता है। किन्नरों के भय से विनोद की माँ उसे हॉस्टल भेजना चाहती है। उस समय उसका बड़ा बेटा चिंता करता हुआ कहता है—

"चौदह बरस, अचानक जिन्न से हिजड़े यहाँ प्रकट हो सकते हैं, तो हॉस्टल में नहीं हो सकते? कोई गारंटी है इसकी?"14

एक दिन वह किन्नरों के पकड़ में आ ही जाता है, और परिवार वाले समाज में बदनामी के भय से यह घोषित कर देते हैं कि दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई है, और अपना घर भी बदल लेते हैं।

विनोद किन्नरों की टोली में रहने हेतु मजबूर हो गया, लेकिन अपने को वह उनके जैसा नहीं बना पाता। उसे किन्नरों के पारंपरिक कार्य भी पसंद नहीं आते, परंतु उनके कुछ महत्वपूर्ण कार्य अपने ज़िम्मे जरूर लेता है — जैसे सरकारी और गैर-सरकारी अस्पतालों के चक्कर लगाकर नवजात बच्चों के घर का पता लगाना, ताकि सभी किन्नर बधाई लेने जा सकें। वह अपने शरीर और जीवन के अधूरेपन और कशमकश को दूर करना चाहता है। वह संकल्प लेता है कि कुछ बनकर अपने बिरादरी के लोगों को समाज में सम्मान दिला सके।

विनोद किन्नर समुदाय के प्रति अपना गुस्सा व्यक्त करता हुआ कहता है—

"यह भीतर से खोखले और डरे हुए लोगों की जमात है। ये चाहते हैं कि जिस विशेष परिभाषा से उन्हें मंडित किया गया है, उसी रूप में सही, उनकी भी एक संगठित उपस्थिति समाज में बने। उनकी ताकत में इज़ाफा हो। ढूँढते फिरते हैं जननांग विकलांगों को, इसलिए कि कहीं से कोई तोड़ मिल जाए।

गुरु परंपरा से दीक्षित बनाए रखना चाहते हैं उसे — उस एकता को, जो उन्हें आपस में जोड़े रहे। अब आप ही बताइए, बा — उन्हें समाज की मुख्यधारा में क्यों नहीं स्वीकार किया जाना चाहिए?"15

विनोद किन्नरों के अपने पारंपरिक व्यवसाय को नहीं अपनाता है कुछ बनना चाहता है वह पढ़ लिखकर बनना चाहता है किन्नर पूनम की सहायता से विधायक जी से मिलता है तब वह कहते हैं-

"किल्लत की जिंदगी तू नहीं जीना चाहता पुत्र बुलंद हौसला है तेरा|"16
विधायक जी की कृपा से विनोद को एनआईटी बेसिक कंप्यूटर प्रोग्राम में दाखिला हो जाता है धीरे-धीरे विधायक जी के सारे काम करने संभालने लगता है
चुनाव का मौसम है विधायक किन्नरों को अपना वोट बैंक के रूप में अपनाना चाहते हैं इसलिए वे विनोद का उपयोग करने का निर्णय लेते हैं विनोद राजनीति का मुहरा बन जाता है लेकिन इसके पीछे राजनीतिक वह नहीं जानता वह किन्नरों को सम्मान की जिंदगी दिलाना चाहता है तथा सरकार से अपील करता है कि - **"लिंग दोषी बिरादरी की घर वापसी को वह सुनिश्चित करें |"17**
चुनाव दूर नहीं है इसी कारण विधायक जी अपनी तैयारी में पूर्णता से लगे हुए हैं फार्म हाउस में महफिल सजाई जाती है पूनम नाच गान करने के बाद जब पोशाक बदलने की ड्रेसिंग रूम में जाती है तब विधायक जी के भतीजे और उसके दोस्त पूनम के साथ नृशंस भरे व्यवहार करते हैं किन्नरों के गुप्तांग को देखने की लालसा में उसके अंग को बेरहमी के साथ काट देते हैं और जब उनका नशा उतर जाता है तब वह पूनम को आधे मारे हालत में छोड़ चले जाते हैं |
"विधायक जी के भतीजे बिल्लू समेत अन्य चारों दोस्तों को रातोरात किसी अज्ञात स्थान के लिए रवाना कर दिया |"18
पूनम अस्पताल में मृत्यु को तड़प रही है उसकी स्थिति से विनोद पूरी तरह विचलित हो जाता है समय उसे इस बात का पता चलता है कि उसकी मां का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है इस स्थिति का असर विनोद पर पड़ता है उसकी मानसिक स्थिति ठीक ना होने पर भी वह आंदोलन से मुंह नहीं मोड़ना चाहता साथ ही आस्तीन के को भी किसी कीमत पर क्षमा नहीं करना चाहता लेकिन बिडम्बना तो देख वह स्वयं सांपों का शिकार हो जाता है

2. निष्कर्ष

'पोस्ट बॉक्स नं. 203, नाला सोपारा' किन्नर समुदाय के जीवन-संघर्ष, सामाजिक तिरस्कार और मानसिक पीड़ा को अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है। चित्रा मुद्गल ने विनोद के माध्यम से यह दिखाया है कि किन्नर भी सामान्य मनुष्यों की तरह सम्मान, प्रेम, परिवार और पहचान की आकांक्षा रखते हैं, किंतु समाज उन्हें स्वीकार करने के बजाय उपेक्षा और अपमान देता है। पत्रात्मक शैली में रचित यह उपन्यास केवल एक व्यक्ति की कथा नहीं, बल्कि संपूर्ण किन्नर समुदाय की संवेदना, अस्मिता और अस्तित्व का दस्तावेज बन जाता है। लेखिका ने समाज की संकीर्ण मानसिकता, परिवार की विवशता तथा राजनीतिक स्वार्थों को भी उजागर किया है। विनोद का संघर्ष शिक्षा, आत्मसम्मान और अधिकार प्राप्ति के लिए है, जो किन्नर विमर्श को नई दिशा देता है। उपन्यास यह संदेश देता है कि किन्नरों को दया नहीं, बल्कि समान अधिकार, सम्मान और सामाजिक स्वीकार्यता की आवश्यकता है। मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण यह कृति समाज को आत्ममंथन करने के लिए बाध्य करती है तथा किन्नर समुदाय के प्रति सहानुभूति और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की प्रेरणा प्रदान करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नाला सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-8
2. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 11
3. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 178
4. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-26
5. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 196-196
6. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 113
7. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 178
8. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 50
9. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 11
10. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 9
11. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 25
12. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 30
13. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 30
14. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 13
15. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-50-51
16. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 39
17. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 186
18. सोपारा पोस्ट बॉक्स नॉ 203, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या- 205